भाकृअनुप
ICAR

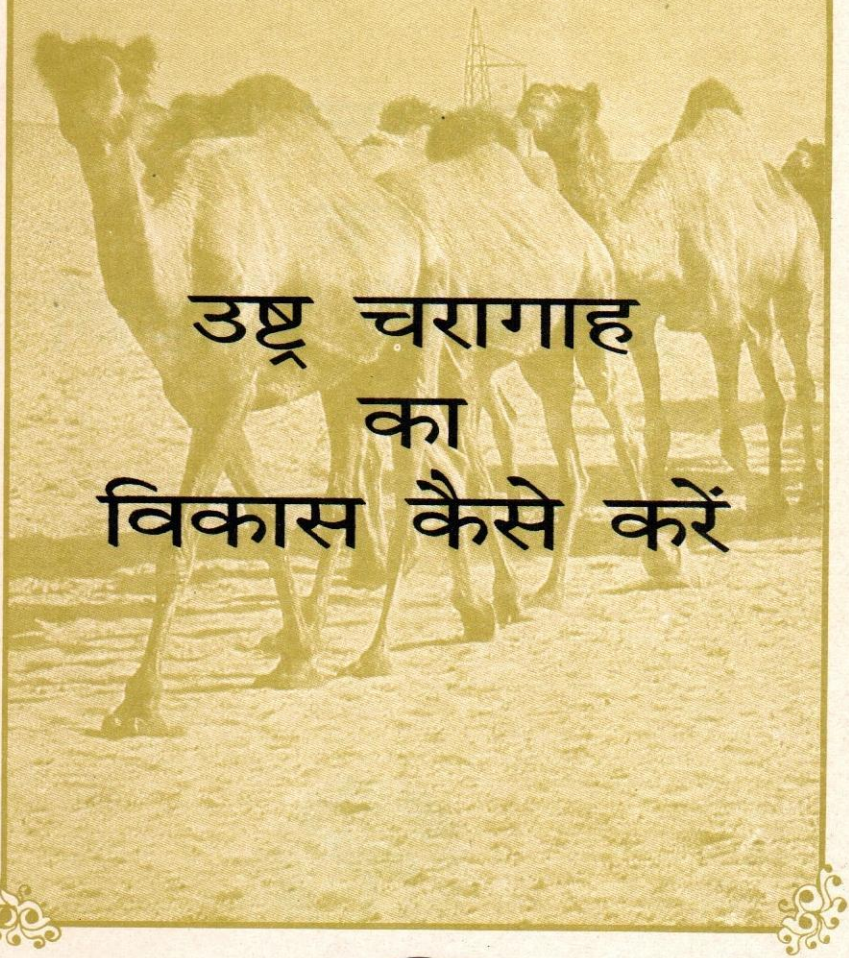

उष्ट्र चरागाह का विकास कैसे करें

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़ शिवबाड़ी
बीकानेर

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक
परियोजना निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी,
बीकानेर 334001

मुद्रक
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रिंटर्स
बिस्सों का चौक
बीकानेर 334001

उष्ट्र चरागाह का विकास कैसे करें ?

तृणमयी धरती जो पशु चारण के लिए कृत्रिम रूप से विकसित की जाती है, चरागाह कहलाती है। घास के साथ यदि वृक्ष भी मिश्रित कर दिये जायें तो उसे वन चरागाह की संज्ञा दी जाती है। पश्चिमी राजस्थान जैसे रेगिस्तानी क्षेत्रों में कृत्रिम चरागाह विकसित करने के लिए निम्न बातों का ध्यान देना आवश्यक है—

1. उपयुक्त किस्मों का चयन

रेतीले क्षेत्र के लिए सेवन एक सर्वोत्तम घास है जिसकी कई किस्में केन्द्रीय मरु-अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर द्वारा विकसित की गयी हैं। जहाँ अपेक्षाकृत वर्षा अधिक होती है, अंजन व धामन घास बलुई-दोमट अथवा दोमट मिट्टी वाली भूमि के लिए उपयुक्त है। अंजन व धामन की कृषि अनुसन्धान संस्थान, दिल्ली तथा चरागाह व चारा विकास अनुसन्धान संस्थान, झांसी द्वारा विकसित किस्मों का चयन करना उचित है। इसी प्रकार रेतीली भूमियों के लिए इसरायली बबूल, विलायती बबूल, खेजड़ी, कुमट, सिरिस, नीम, फरास, फोग, बोरड़ी, इत्यादि तथा क्षारीय क्षेत्रों के लिए जॉल,

खरजाल, फरास तथा विलायती बबूल जैसे वृक्ष व झाड़ अनुमोदित की गयी हैं।

2. वन-चरागाह स्थापन

किसी क्षेत्र विशेष में वन चरागाह स्थापित करने के लिए पहले वृक्ष स्थापित कर फिर घास बोना श्रेयकर रहता है क्योंकि घास पहले बो देने से पौधों को पानी देने के लिए आते-जाते ट्रैक्टर व गाड़ों से चरागाह की भारी क्षति होती है।

3. वृक्षारोपण

खेजड़ी, विलायती बबूल, पार्किनसोनिया, बोरड़ी जैसी किस्में प्रत्यक्ष बीज से भी स्थापित की जाती है परन्तु नीम, सिरस, फोग, जॉल, इसरायली बबूल इत्यादि किस्मों की पौधशाला उगानी पड़ती है। रेत, खाद व काली मिट्टी की बराबर मात्रा मिलाकर पॉलीथीन की थैलियों में भर ली जाती है तथा क्यारियों में सजाकर, पानी से तर करने के वाद भिगोया हुआ या तेजाब रन्धित बीज बोया जाता है। सिंचाई व छाया का विशेष प्रबन्ध करना आवश्यक है। एक दिन के अन्तराल से झारे से सिंचाई करना चाहिए।

4. गड्ढे की खुदाई व पौधों की रोपाई

रोपाई से एक-डेढ़ महीना पहले बुलुई मिट्टी में 60 वर्ग सेमी तथा भारी मिट्टी में 90 सेमी आकार के गड्ढे वृक्षों के लिए 5 मी. × 5 मी. व झाड़ों के लिए 2 मी. × 2 मी. की दूरी पर खोद लिये जाते, तथा मानसून प्रारम्भ

होने पर 9-10 महीने के पौधे गड्ढे में खाद मिली मिट्टी भरकर लगा दिये जाते हैं। दीमक से बचाने के लिए एल्ड्रीन का प्रयोग आवश्यक है। इस केन्द्र के प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि जुलाई-अगस्त की अपेक्षा अक्तूबर-नवम्बर का समय पौधों की सफलता के लिए अच्छा है क्योंकि इन दिनों आँधी व गर्मी कम हो जाती है तथा भूमि में नमी बनी रहती है।

5. देखभाल

वृक्षारोपण के पश्चात प्रथम दो वर्षों तक काफी देखभाल की आवश्यकता होती है। क्योंकि दीमक, चूहे, जंगली व आवारा जानवर पौधों को नष्ट कर देते हैं। कीड़ों के लिए एल्ड्रीन, बी. एच. सी. इत्यादि चूहों के लिए जिंक फासफाइड, तथा जानवरों के लिए समुचित बाड़ या रखवाल, कारगर उपाय हैं। सर्दी व गर्मी से पौधों को बचाने के लिए इस क्षेत्र में प्रचुरता से उपलब्ध खीप, सनिया, बोरड़ी इत्यादि के टोप अथवा झोपड़ी बनाना आवश्यक है। प्रत्येक पौधे के चारों ओर थाले बनाकर कम-से कम एक वर्ष तक गर्मी में हर तीसरे चौथे दिन तथा शीतकाल में सप्ताह में एक बार पानी लगाना चाहिए। समय से खर-पतवार निकालते रहें, कीटनाशक दवा दें तथा सूखे हुए पौधों के स्थान पर दूसरा नया पौधा लगा दें। आवश्यकतानुसार स्थापित पौधों की काट-छांट करते रहें। पेड़ों से चारे की उपलब्धि वृक्ष की किस्मों पर निर्भर करती है। खेजड़ी वृक्ष के तैयार होने में कम-से-कम 10-15 वर्ष का समय लग जाता है जबकि, सिरस व नीम से 6-7 साल के उपरान्त पत्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। प्रति खेजड़ी से प्रतिवर्ष 8-10 किलो तथा प्रति बोरडी से प्रतिवर्ष 1-2 किलो शुष्क चारा प्राप्त हो सकता है।

6. घास की बुआई

पेड़ के लगाने के दूसरे वर्ष घास की बुआई करनी चाहिए। बुआई के

पहले अवांछित खर-पतवारों व झाड़ियों को साफ कर प्रति हेक्टेयर 8-10 टन की दर से गोबर की खाद डालकर पौधों को बचाते हुए खेत की जुताई कर दें। घने रोपण क्षेत्रों में उष्ट्र हल का प्रयोग सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। जुताई से पूर्व 20-25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से एल्ड्रीन पाउडर छिड़क दें।

जुलाई में पहली या दूसरी वर्षा बुआई के लिए सर्वोत्तम है। हल्की भूमि में एक हैरो या दो बार हल की जुताई तथा भारी भूमि में पहली बार तवादार हल तथा एक दो बार हेरो कर देने से खेत तैयार हो जाता है। वर्षाकाल में कल्टीवेटर या हल से 75 सेमी. की दूरी पर नालियाँ बना लें तथा 35-40 सेमी. की दूरी पर घास के बीज बोवें। घास बोने के तीन तरीके प्रचलित हैं—बीज द्वारा गोलियों द्वारा या रोपाई द्वारा। बुआई से ठीक पहले सूखे या भिगोये बीज लगभग बीज के बराबर मिट्टी में मिला ली जाती है तथा मिट्टी सहित लगभग 8-10 बीज नालियों में बोये जाते हैं तथा पैर से दबाते चलते हैं। अन्य विधि में बीज को गीली मिट्टी में सान दिया जाता है और मिट्टी को तोड़-तोड़कर बोते हैं। बुआई के महीने डेढ़ महीने पहले ग्रीष्मकाल में ही बीज, रेत खाद व चिकनी मिट्टी (1 : 1 : 1 : 3) के अनुपात में बीज के साथ मिला कर गोलियाँ बना ली जातीं हैं व समय पर नालियों में बोई जाती है। यदि वर्षा अच्छी हो तो पौधों की रोपाई भी की जा सकती है। इसके लिए या तो पौधशाला तैयार की जाती है या पुराने घास के गुच्छे पूरा या आधा उखाड़कर जड़ सहित अलग-अलग कर रोपे जाते हैं। जुलाई में रोपने के लिए पौधशाला की क्यारियों में बीज मार्च-अप्रैल में ही वो दिये जाते हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में रोपाई की सुविधा के लिए 10सेमी. × 10 सेमी. के पॉलीथीन की थैलियों में भी घास उगायी जाती है। सेवन का बीज 8-10 कि.ग्राम अंजन 6-8 कि.ग्राम धामन 5-6 कि.ग्राम तथा ग्रामना 2-3 कि.ग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है।

7. चरागाह की देखरेख व उपयोग

स्थापन के बाद चरागाह की कोई विशेष देख-रेख की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यदि वर्षा की कमी हो और सुविधा हो तो आंशिक सिंचाई करें। इस काम के लिए मरुक्षेत्र में फुहारे अधिक उपयोगी है। घास स्पष्ट रूप से दिखाई देने के बाद बूई सनिया जैसे खर-पतवार निकाल दें तथा निराई-गुड़ाई के बाद 15-20 किलो यूरिया प्रति हेक्टेयर का बुरकाव करें। स्थापन वर्ष में चराई पर प्रतिबन्ध आवश्यक है क्योंकि चराने से घास दबने से खराब हो जाती है जिससे अगले वर्ष सन्तोषजनक पनप नहीं पाती। दूसरे वर्ष से पशुओं को चरने के लिए छोड़ा जा सकता है बशर्ते पौध रक्षा के पूर्ण प्रबन्ध हों। उपयुक्त वर्षाकाल में 3-5 टन चारा व 250 किलो बीज तथा अन-उपयुक्त वर्षाकाल में 1-2 टन शुष्क चारा तथा 150 किलो बीज प्रति हेक्टेअर प्राप्त हो सकता है। प्रथम वर्ष उपज वृद्धि के लिए घास के साथ मोठ की मिश्रित बुआई की जा सकती है जिसकी उपज 3-8 क्विण्टल दाना व 1-2 क्विण्टल शुष्क चारा मिल सकता है।

आलेख

आर. डी. प्रसाद

प्रकाशक

परियोजना निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़ शिवबाड़ी

बीकानेर

आलेख

आर. डी. प्रसाद